श्री आत्मसिद्धि शास्त्र

Shri Atmasiddhi Shastra

‘मोक्ष का उपाय’ पुनरावृत्ति | Recap of the Path to Liberation

JUNE 2026

कर्म सिद्धांत
Karma Principles

भाव कर्म निज कल्पना, इसलिए चेतन रूप;
जीव वीर्य की स्फूरणा, ग्रहण करे जड़ धूप ।। 82।।

1. जैसी करनी, वैसी भरनी
   As you sow, so shall you reap
2. कर्म = कार्य + भाव + संयोजन
   Karma = Action + Intention + Connection
3. आपका कर्म = आपकी ज़िम्मेदारी
   Your Karma = Your responsibility
4. कर्म यानी सज़ा नहीं, शिक्षा
   Karma is a learning, not a punishment
5. कर्म सत्ता समय के पार से संचालित होती है
   Karma operates across time
6. कर्म को बदला जा सकता है
   Karma can be changed
   - i) सजगता द्वारा कर्म-उदय से दूरी बनाकर
     Using awareness to witness karmic consequences
   - ii) ‘मैं’ का भ्रम तोड़कर
     Breaking the myth of individuality

छठा पद – मोक्ष का उपाय है
Sixth Truth – There is a Path to Liberation

जैन और आध्यात्मिक दृष्टिकोण | Jain vs Spiritual Perspectives

	जैन दृष्टि (Jain Perspective)	अध्यात्म दृष्टि (Spiritual Perspective)
1	अंतिम लक्ष्य को मुक्ति कहते हैं The end goal is liberation	अंतिम लक्ष्य को मिलन कहते हैं The end goal is union
2	आत्मा की स्वतंत्र मौजूदगी बनी रहती है Soul remains an independent entity	आत्मा की परमात्मा (ईश्वर) में लीनता होती है Soul dissolves in God
3	पुरुषार्थ प्रधान मार्ग Effort-oriented path	समर्पण प्रधान मार्ग Surrender-oriented path
4	केंद्र में कर्म-ध्वंस (नाश) है Revolves around nullifying karma	केंद्र में परम-संयोजन है Revolves around the supreme connection
5	कर्म यानी द्रव्य और भाव कर्म Karma = Action + Intention	कर्म यानी कृत्य + भाव + संयोजन Karma = Action + Intention + Connection
6	विवेक वैराग्य से पहले है Focus on intellect (Vivek) before Vairagya	वैराग्य विवेक से पहले है Focus on Vairagya before intellect (Vivek)
7	तप और त्याग की प्रधानता है Focus on penance and renunciation	गुण और संवेदन की प्रधानता है Focus on virtues and experience (Vedan)

The ego’s journey from mind to heart to Beloved
अहम् की यात्रा – मन से हृदय तक, हृदय से प्रियतम तक

1. The comparing mind - Die-hard ego
   तुलनात्मक बुद्धि - ठोस अहंकार
2. The anticipating mind - Demanding ego
   प्रत्याशित बुद्धि - जटिल अहंकार
3. The knowing heart - Devoted ego
   बोधपूर्ण हृदय - सरल अहंकार
4. The flowing heart - Dissolving ego
   प्रवाहमान हृदय - शून्य अहंकार

शिष्य की छठे पद की शंका के कारण
Reasons for disciple’s doubts regarding the sixth truth

शंका 1 — निःशंकता की कमी (Lack of confidence)
शंका 2 — संयोजन की कमी (Lack of connection)
शंका 3 — समर्पण की कमी (Lack of surrender)
शंका 4 — विवेक की कमी (Lack of discernment)
शंका 5 — विशालबुद्धि की कमी (Lack of intellect)
शंका 6 — अनुभव की कमी (Lack of experience)

कर्मभाव और मोक्षभाव
Karmic Intent vs Liberating Intent

कर्मभाव अज्ञान है, मोक्षभाव निजवास
अंधकार अज्ञान सम, नाशे ज्ञान प्रकाश ।। 98 ।।

क्रम S. No.	विषय Feature	कर्मभाव (Karmic Intent) Action + Intention	मोक्षभाव (Liberating Intent) Action + Intention + Connection
1	**दृष्टिकोण** **Perspective**	बहिर्मुख Extroverted	अंतर्मुख Introverted
2	**पहचान** **Identity**	शरीर, कर्म, धर्म, समाज, राष्ट्रीयता Body, actions, religion, society, nationality	जीवन-ऊर्जा Life-energy
3	**अनुभव** **Experience**	मैं ही कर्त्ता हूँ, भोक्ता हूँ I am the doer, and the one who reaps	नास्तिक दर्शन - मैं द्रष्टा मात्र हूँ आस्तिक दर्शन - मैं प्रकृति का समन्वय हूँ अध्यात्म - मैं प्रियतम (पुरुष) का हूँ Atheism - I am a witness Theism - I am the harmony of Nature Spirituality - I belong to Beloved (God)
4	**प्रवृत्ति** **Activity**	‘करने’ पर ज़ोर है Focus on ‘doing’	‘होने’ पर जोर है Focus on ‘being’

5	**परिणाम** **Result**	पुण्य-पाप का संचय और परिभ्रमण Karmic credits and debits, cycle of birth and death	पूर्व कर्म की निर्जरा और मिलन Karmic dissolution, sacred union
6	**ऊर्जा क्षेत्र** **Energy zone**	निम्न और मध्यम का आरंभ Lower zone, beginning of middle zone	मध्यम का उन्नत और उत्तम Upper-middle and upper zones

आध्यात्मिक बेसुधी
Spiritual Numbness

राग-द्वेष अज्ञान ये, मुख्य कर्म की गाँठ;
होय निवृत्ति जिससे, वही मोक्ष का पंथ ।।100।।

आत्मा सत् चैतन्यमय, सर्वाभास रहित;
जिससे केवल पाइए, मोक्ष पंथ की रीत ।।101।।

राग-द्वेष-अज्ञान के कारण | Causes of attachment, aversion, and ignorance

1. विवेक की कमी | Lack of intellect
2. पर में सुख-बुद्धि | Seeking joy from outside
3. सत्य का विस्मरण | Forgetting true self
4. सत्संग की कमी | Lack of Satsang

आध्यात्मिक बेसुधी की परिभाषा | Definition of spiritual numbness

साधक की ऐसी भावनात्मक स्थिति जिसमें उसे तारने वाले सभी साधनों में नीरसता लगती है।
The state of a spiritual seeker where there is an emotional indifference for anything that uplifts his consciousness.

आध्यात्मिक बेसुधी के कारण | Causes of spiritual numbness

1. Excessive worldly concerns
   अत्यधिक सांसारिक चिंता

2. Habitual sin without repentance
   पश्चाताप के बिना पाप सेवन

3. Consuming unlawful things
   तामसिक आहार/विचार को ग्रहण करते रहना

4. Keeping company with indulgent minds
   भोगी चित्त के साथ रहना

आध्यात्मिक बेसुधी के उपचार | Remedies of spiritual numbness

1. Be present in satsang/samagam
   सत्संग/समागम में पूर्णतः मौजूद रहें

2. Engage frequently in smaran
   स्मरण में बारंबार आयें

3. Practice selfless seva in daily life
   निष्काम सेवा के लिए समय निकालें

4. Talk to Beloved in ordinary language
   अपनी भाषा में ईश्वर से बातें करें

5. Recall the spiritual experiences
   आध्यात्मिक अनुभवों का स्मरण करें

आध्यात्मिक बेसुधी के चरण | Stages of spiritual numbness

1. **Beginning of spiritual numbness - बाह्य क्रिया**
   आज्ञा-पालन में भारीपन, सांसारिक कार्य में उत्साह
   When there is heaviness in rituals given to guard your heart and lightness in mayic traps.

2. **Middle stage of spiritual numbness - जड़ क्रिया**
   आज्ञा-पालन में मन का कहीं और भटकना
   When you perform spiritual rituals without putting your heart into them.

3. **Advanced stage of spiritual numbness - पाप क्रिया**
   आज्ञा-पालन में पाप करना, और उसका कोई पश्चाताप न होना
   When your mind is committing sins with respect to rituals without any sense of remorse.

मोहनीय-कर्म – एक परिपूर्ण दृष्टिकोण
Mohaniya Karma – A Comprehensive Perspective

कर्म अनंत प्रकार के, उनमें मुख्य आठ;
इनमें मुख्य मोहनीय, नाश करे कहूँ पाठ ।।102।।

कर्म मोहनीय भेद दो, दर्शन चारित्र नाम;
हरे बोध वीतरागता, अचूक उपाय मान ।।103।।

कर्मबंध क्रोधादि को, हरे क्षमादि से;
प्रत्यक्ष अनुभव सब करें, इसमें क्या संदेह? ।।104।।

क्रम S. No.	विशेषता Feature	सामान्य जैन दृष्टि Common Jain Perspective	अध्यात्म दृष्टि Spiritual Perspective
1	**विषय Subject**	मोहनीय कर्म Delusion	अहंकार Ego
2	**अभिव्यक्ति Expression**	पुद्गल Particle	पर्दा Veil
3	**प्रमुख मार्ग Main Path**	मोहनीय कर्म से मुक्ति का मार्ग (सम्यक् दर्शन-ज्ञान-चारित्र) Liberation from delusion (Right faith, understanding, conduct)	ईश्वर से मिलन का मार्ग (वैराग्य, जिज्ञासा, प्रार्थना, प्रवाह-अवस्था, लौटाना, पवित्र मिलन) Union with Beloved (Awakening, curiosity, prayer, flow state, returning, sacred union)
4	**बोध प्रवाह Framework of Understanding**	जीव और जगत Soul and Creation	जीव, जगत और जगदीश Soul, Creation, and Creator
5	**प्रमुख बाधा Key Obstacle**	एकत्व बुद्धि - शरीर और आत्मा को एक मानना Non-dual perception: Treating body and soul as a single entity	दुई बुद्धि - मैं और 'तू' को अलग मानना Dual perception: Separation between 'I' and 'You'

6	**समाधान** **Solution**	भेद-विज्ञान यानी देह-आत्मा को भिन्न करते रहना Spiritual discrimination: Recognizing the body and soul as distinct	ईश्वर-प्रधान यानी स्वयं को ईश्वरीय मौजूदगी में समर्पित करते रहना Sacred Union: Dissolving the self in the Beloved's presence
7	**प्रयोग** **Practices**	ज्ञाता-द्रष्टा भाव, स्वयं के शुद्ध-बुद्ध-मुक्त-स्वरूप का स्मरण, विवेक का विस्तार, सहज सजगता Remaining an observer/witness, Remembering one's pure-enlightened-liberated nature, Expansion of intellect and discernment, Effortless awareness	अकर्त्ता भाव, कृपाधीनता, आंतरिक बोध की गहराई, सहज समर्पण Non-doership, Attributing everything to Grace, Depth of inner realisation, Effortless surrender

व्यावहारिक प्रयोग | Practical Tools

1. सत्संग श्रवण-मनन-निदिध्यासन
   Satsang: Listening, revisiting and contemplating
2. अशुभ भाव के समय दृष्टा भाव
   Witnessing negative thoughts and feelings
3. अशुभ कर्म के समय खेद-पश्चाताप-प्रायश्चित
   Regret, repentance, and atonement for bad deeds
4. शुभ भाव के समय ईश्वर को धन्यवाद
   Expressing gratitude to God for positive thoughts and feelings
5. शुभ कर्म के समय ईश्वर के प्रति समर्पण
   Offering good deeds to God
6. हृदय केंद्र के आसपास स्मरण की प्रगाढ़ता
   Remembrance of Beloved with focus around the heart center
7. आंतरिक मौन और प्रतीक्षा का धैर्य
   Inner silence and patience of waiting

संप्रदाय और सद्गुरु का भेद
The Difference between Sadguru and Religious Sects

क्रम S. No.	विशेषता Feature	संप्रदाय Religious Sect	सद्गुरु Sadguru
1	**दृष्टिकोण** **Perspective**	अतीत की ओर (परंपरा) Backward looking (Tradition)	वर्तमान का अनुभव Experience of Presence in present
2	**अधिकार** **Authority**	शास्त्र, पंडित, पुरोहित Scriptures, Scholars, Priests	प्रियतम का अनुभव और उच्च उद्देश्य Experience of Beloved and Higher Purpose
3	**विकास** **Growth**	पुण्य कर्म इकट्ठा करना Accumulating Karmic credit through good deeds	पर्दा गिराना, झूठे स्व को मिटाना Removing the veil, dissolving the false identification
4	**अनुभव** **Experience**	सुरक्षा और समूह का हिस्सा होना Feeling of security in becoming part of the sect	मुक्ति और मिलन का परमानंद Ecstasy of liberation and sacred union

अध्यात्म की अंतर्यात्रा – प्रेम हो जाने के छः चरण
The Spiritual Journey Within – Six Stages of Becoming Love

कषाय की उपशांतता, मात्र मोक्ष अभिलाष;
भव खेद अंतर दया, वह कहिए जिज्ञास। ।।108।।

जिज्ञासा यानी वृत्ति की पहचान और उसकी दिशा को पलटना
चरण – वैराग्य और जिज्ञासा का सम्मिश्रण
Curiosity means recognizing one’s tendencies and reversing their direction.
Stage – Awakening + Curiosity

उस जिज्ञासु जीव को, मिले जो सद्गुरु बोध;
तो पाये समकित को, वर्ते अंतर्शोध। ।।109।।

दिशा को पलटने में सहयोगी **सद्गुरु बोध** का मिलना
चरण – जिज्ञासा की गहराई
Receiving the **wisdom of a Sadguru** to reverse the direction.
Stage – Depth of curiosity

मत दर्शन आग्रह त्यजे, वर्ते सद्गुरु लक्ष्य;
पाये शुद्ध समकित को, जिसमें भेद न पक्ष। ।।110।।

सद्गुरु-लक्ष्य (केंद्र) से अंतिम दीवारों का गिरना
चरण – प्रार्थना में केंद्रित जीवन
Final walls begin to collapse with a **Saduguru-centered** life.
Stage – Life anchored in prayer

वर्ते निज स्वभाव का, अनुभव लक्ष्य प्रतीत;
वृत्ति बहे निजभाव में, परमार्थ समकित। ।।111।।

निजभाव यानी अनंत का आँगन में उतरना
चरण – प्रवाह अवस्था में प्रवेश
Abiding in **Nijbhaav** (one’s true nature), a sign of Beloved’s arrival in the heart.
Stage – Entering flow state

वर्धमान समकित हो, टाले मिथ्याभास;
उदय होय चारित्र का, वीतराग पद वास। ।।112।।

आचरण विशुद्धि (वेदन) से **वीतराग पद** में ठहरना
चरण – लौटना/लौटाना से सम्मत जीवन
Staying **free from Raag-Dwesh** through purity of conduct (Vedan).
Stage – A life aligned with ‘returning’

केवल निज स्वभाव का, अखंड वर्ते ज्ञान;
कहिए केवलज्ञान उसे, देह संग निर्वाण। ।।113।।

प्रियतम से मिलन अर्थात् **देह संग निर्वाण**

चरण – पवित्र मिलन के दिव्य पल

Living a life of liberation, that is, union with the Beloved.

Stage – Divine moments of sacred union

कोटि वर्ष का स्वप्न भी, जागृत हो भ्रम जाए;
ऐसे विभाव अनादि का, ज्ञान होय दूर जाय। ।।114।।

पूर्व-संचित कर्म से निवृत्ति और **भ्रम** का विसर्जन

चरण - अहं का पिघलना और प्रेम में मिलना

Freedom from karmic debt, end of illusion

Stage – Dissolution of ego, merging in Love

देहाध्यास का छूटना
Transcending Body Consciousness

छूटे देहाध्यास तो, नहीं कर्त्ता तू कर्म,
नहीं भोक्ता तू उसका, यही धर्म का मर्म ।।115।।

इसी धर्म से मोक्ष है, तू है मोक्ष स्वरूप;
अनंत दर्शन ज्ञान तू, अव्याबाध स्वरूप ।।116।।

शुद्ध, बुद्ध, चैतन्यघन, स्वयं ज्योति सुखधाम;
दूसरा कहें अब और क्या? कर विचार तो पाय ।।117।।

निश्चय सर्व ज्ञानी का, यहाँ पे आकर समाय;
धरा मौन ये बोलकर, सहज समाधि में जाय ।।118।।

क्रम S. No.	देहाध्यास होना (स्वयं को शरीर मात्र मानना) Body consciousness (identification with the body)	देहाध्यास छूटना (स्वयं को आत्म-स्वरूप जानना) Transcending body consciousness (knowing one’s true nature)
1	शरीर केंद्रित जीवन Life revolves around physical needs	उच्च उद्देश्य केंद्रित जीवन Life revolves around a higher purpose

2	सुख-दुख का गहरा असर Deep impact of pain and pleasure	सुख-दुख में सहज शांत भाव Remaining naturally calm in both pain & pleasure
3	OAA (Orientation Association Area, सहस्रार के आसपास) 24 घंटे सक्रिय रहता है OAA (near the Sahastrar Chakra) remains active throughout the day	OAA को signal नहीं मिलता तो मस्तिष्क शरीर की सीमा को महसूस नहीं कर पाता Lack of signals in the OAA, brain loses its sense of physical boundaries
4	DMN (Default mode network) सक्रिय रहता है DMN remains active	DMN शांत होने से मानसिक बड़बड़ बंद होती है DMN calms down, mental chatter stops
5	Amygdala (लड़ो-या-भागो प्रतिक्रिया) सदा सक्रिय रहता है Amygdala (fight-or-flight response) remains constantly active	Amygdala छोटा हो जाता है और PFC (prefrontal cortex) बड़ा होने से विवेक और सहजता के गुण उघड़ते हैं Amygdala shrinks, PFC enlarges, enhancing virtues like discernment (Vivek) and awareness
6	तनाव के hormones का स्राव चलता रहता है Stress hormones are released	आनंद के hormones सक्रिय रहते हैं Joy-boosting 'feel-good' hormones are released
7	प्रियतम, परमात्मा, परब्रह्म के होने का कोई संकेत ही नहीं मिलता Receive no sign of presence of God/Beloved/Supreme Consciousness	प्रियतम से कोई न कोई संकेत मिलता रहता है जो हृदय को आनंद-प्रेम-शांति से भरता है Keep receiving signs of Beloved's Presence, which fills the heart with joy-love-peace

अहं-मम भाव को कैसे कम करें?

How to reduce ego?

1. The language experiment — भाषा प्रयोग
2. The 'You are right' experiment — 'आप सही हैं' प्रयोग
3. The anonymity experiment — गुप्त-कर्म प्रयोग
4. The Cosmic-perspective experiment — ब्रह्मांडीय-दृष्टिकोण प्रयोग
5. The reverse-energy experiment — विपरीत-ऊर्जा प्रयोग
6. The meditation experiment — ध्यान प्रयोग